



पत्र-पुष्प



“अधिकारीपन की सीट पर रह समस्याओं को समाधान स्वरूप में परिवर्तन करो” (दादी जी - 21-08-2023)

प्राणप्यारे अव्यक्तमूर्त मात-पिता बापदादा के अति स्नेही, सदा अनुभवीमूर्त बन अपने फाउण्डेशन को मजबूत करने वाले, अपनी डबल लाइट शक्तिशाली स्थिति द्वारा हर कारण का निवारण कर, समाधान स्वरूप बनने वाली निमित्त टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार – बाबा कहते बच्चे, यह युग उड़ती कला का युग है, इसमें आप ब्राह्मण बच्चों को उड़ने और उड़ाने का ही कर्तव्य करना है। अपनी उड़ती कला द्वारा सर्व समस्याओं को ऐसे पार करना है जैसे कुछ हुआ ही नहीं। नीचे की कोई भी चीज़ डिस्टर्ब न करे, रूकावट न डाले। आपके दिल में, नयनों में सदा एक बाप ही समाया हुआ हो, “एक बाप दूसरा न कोई”, सदा इसी लगन में मगन रहो तब आने वाली परीक्षाओं को, समस्याओं को सहज पार कर सकेंगे। बाबा के विजयी रत्न बच्चे, किसी भी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करते लेकिन हर कार्य करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद की वैराग्य वृत्ति में रहते हैं। समस्या के समय स्व राज्य अधिकारीपन की सीट पर रह समाधान स्वरूप बनते हैं। कई बार अपने ही पुराने संस्कार भिन्न-भिन्न रूप में समस्या बनकर आते हैं, उन्हें समाप्त करने के लिए दाता, विधाता और वरदातापन के संस्कार इमर्ज करने हैं। यह महासंस्कार कमजोर संस्कार को स्वतः समाप्त कर देंगे। मैं “मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ”, इस स्मृति में रहने से सर्व समस्यायें एक खेल और खिलौने समान अनुभव होंगी। कितनी भी बड़ी बात छोटी हो जायेगी। बोलो, मीठे भाई बहिनें ऐसा ही अनुभव करते हो ना!

मधुबन बेहद घर में अभी जुलाई-अगस्त महीने में सभी स्थानों पर तपस्या की बहुत अच्छी लहर चली। हजारों भाई बहिनें बाबा के घर में आकर खूब रिफ्रेश हुए। स्वयं को सर्व शक्तियों से सम्पन्न बनाया। हम सबकी अति प्यारी दादी प्रकाशमणि जी का यह 16 वां पुण्य स्मृति दिवस पर इस बार युगलों की विशेष भट्ठी रखी गई है। दादी जी की पालना तो अनेक आत्माओं ने ली है, सभी के दिल में दादी जी के प्रति असीम प्यार है। उसी भावना से सभी प्रकाश-स्तम्भ पर जाते और उनकी मधुर यादों के साथ स्नेह भरी शिक्षाओं को याद करते हैं। फिर रक्षा बंधन के पावन पर्व पर सभी स्थानों पर बहुत अच्छी-अच्छी बेहद की सेवायें होती हैं। अनेक आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश देने का यह भी बहुत सुन्दर अवसर होता है। फिर इस सितम्बर मास में विशेष शान्तिवन में अनेक विंग्स की कान्फ्रेन्सेज हैं, जिसमें सम्पर्क-सम्बन्ध वाली आत्मायें, आई.पी., वी.आई.पी. बाबा के घर में आकर बहुत अच्छी प्रेरणायें लेकर जाते हैं। इन बेहद सेवाओं के पश्चात अक्टूबर मास से देश विदेश के सभी बाबा के नये पुराने बच्चे अपने प्राणप्यारे अव्यक्त बापदादा की अलौकिक मिलन महफिल में आकर अपनी झोली अनेक वरदानों से भरपूर करते रहेंगे। संगमयुग के यह दिन भी बहुत सुहाने हैं, मधुबन की यह पावन शक्तिशाली धरनी सबको अनेक नवीन अनुभवों से भरपूर कर देती है।

अच्छा - आप सबका स्वास्थ्य ठीक होगा। सभी को बहुत-बहुत याद...

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के.रतनमोहिनी



ये अव्यक्त इशारे



समस्या मुक्त, समाधान स्वरूप बनो और बनाओ

1) बापदादा की एक ही आशा है कि अब कारण खत्म हो, निवारण ही दिखाई दे। समस्या समाप्त हो जाए, समाधान होता रहे, इसलिए किसी भी कमजोरी की बात में कारण नहीं बताओ, निवारण करो। अब पुरानी भाषा, पुरानी चाल, अलबेलेपन की, कडुवेपन की भाषा परिवर्तन कर समाधान स्वरूप बनो।

2) जितना अनुभवी मूर्त बनते जायेंगे उतना फाउन्डेशन पक्का होगा। फिर किसी भी प्रकार का विघ्न व समस्या खेल के समान अनुभव होगी। कोई भी सीन सामने आती है तो ड्रामा के हिसाब से सब खेल है, यह स्मृति रहे तो कैसी भी समस्या में स्थिति एकरस रहेगी, हलचल नहीं होगी।

3) जैसे लौकिक जीवन में मां बच्चे को पालना द्वारा शक्तिशाली बनाती है, जिससे वह किसी भी समस्या का सामना कर सके। सदा तन्दुरुस्त रहे, सम्पत्तिवान रहे। ऐसे आप श्रेष्ठ आत्मायें जगत मां, बेहद की मां बन, हर एक को ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो वे अपने को विघ्न-विनाशक, शक्ति सम्पन्न हेल्दी और वेल्दी अनुभव करें।

4) जैसा समय, जैसी समस्यायें हो, जैसे व्यक्ति हों वैसे स्वयं को मोल्ड कर स्व कल्याण और औरों का कल्याण करने के लिए सदा इज़ी रहो। परिस्थिति प्रमाण अपने नाम का, संस्कारों का, स्थूल साधनों का अगर त्याग भी करना पड़े, तो त्याग करके अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना लो, सदा अपनी डबल लाइट स्थिति में रहो तो हर समस्या को सहज पार कर लेंगे।

5) यह युग उड़ती कला का युग है, ब्राह्मणों का कर्तव्य ही उड़ना और उड़ाना है। वास्तविक स्टेज भी उड़ती कला है। उड़ती कला वाला सेकण्ड में सर्व समस्यायें ऐसे पार करेगा जैसे कुछ हुआ ही नहीं। उसे नीचे की कोई भी चीज़ डिस्टर्ब नहीं करेगी, रूकावट नहीं डालेगी।

6) सदा नयनों में, दिल में बाप को समाते हुए एक बाप दूसरा न कोई – इसी लगन में मगन रहो। तो आई हुई परीक्षाओं को, समस्याओं को, व्यर्थ संकल्पों को पानी पर लकीर के समान पार कर पास विद आनर बन जायेंगे।

7) सदा बाप के अटूट लगन में मगन रहते हुए आगे बढ़ते

चलो, यह अटूट याद ही सर्व समस्याओं को समाप्त कर उड़ती पंछी बनाए उड़ती कला में ले जायेगी। बापदादा अभी सर्व बच्चों को मेहनत से मुक्त, समस्याओं से मुक्त बनाना चाहते हैं। आप मास्टर मुक्तिदाता बच्चे जब स्वयं सर्व समस्याओं से मुक्त बनेंगे तब अनेक आत्माओं को मुक्ति दिलाने के निमित्त बन सकेंगे।

8) “मैं मस्तकमणि हूँ”, मस्तक में सदा बाप की याद रहे, इसी को ही ऊंची स्टेज कहा जाता है। इस ऊंची स्टेज पर स्थित रहने वाले नीचे की अनेक प्रकार की बातों को ऐसे पार कर लेते हैं जैसे कुछ है ही नहीं। इससे समस्यायें नीचे रह जायेंगी और आप ऊपर हो जायेंगे। सदा सहजयोगी, सहज पुरुषार्थी, सहज प्राप्ति स्वरूप बनो, तो हिमालय पर्वत जितनी बड़ी समस्या को भी उड़ती कला के आधार पर सेकण्ड में पार कर लेंगे।

9) “आप और बाप” - इस कम्बाइन्ड रूप का अनुभव करते, सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना, श्रेष्ठ वाणी, श्रेष्ठ दृष्टि, श्रेष्ठ कर्म द्वारा विश्व कल्याणकारी स्वरूप का अनुभव करो तो सेकण्ड में सर्व समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। सदा एक स्लोगन याद रखना - “न समस्या बनेंगे न समस्या को देख डगमग होंगे, स्वयं भी समाधान स्वरूप रहेंगे और दूसरों को भी समाधान देंगे।” यह स्मृति सफलता स्वरूप बना देगी।

10) जो विजयी रत्न हैं वह किसी भी कार्य से, समस्या से, व्यक्ति से किनारा नहीं करेंगे लेकिन सब कर्म करते हुए, सामना करते हुए, सहयोगी बनते हुए बेहद की वैराग्य वृत्ति में रहेंगे। दूसरे को उलहना नहीं देंगे। समस्या के समय स्वराज्य अधिकारीपन की सीट पर रह समाधान स्वरूप बनेंगे।

11) हर घड़ी विश्व कल्याण प्रति समर्पित करो। जब हर संकल्प, हर सेकेण्ड सेवा में बिजी रहेंगे, फुर्सत नहीं होगी, तो माया को भी आपके पास आने की फुर्सत नहीं होगी। समस्यायें समाधान के रूप में परिवर्तित हो जायेंगी। समाधान स्वरूप श्रेष्ठ आत्माओं के पास समस्या आने की हिम्मत नहीं रख सकती।

12) मन्सा-वाचा-कर्मणा निरन्तर दान दो, वरदान दो तो स्व का ग्रहण स्वतः ही समाप्त हो जायेगा, अविनाशी लंगर लगाओ। पुराने संस्कार जो भिन्न-भिन्न रूप में समस्या बनकर आते हैं,

उन्हें समाप्त करने के लिए अब शक्तिशाली संस्कार - दाता, विधाता, वरदाता के इमर्ज करो। यह महासंस्कार कमजोर संस्कार को स्वतः समाप्त कर देंगे। आप औरों को रास्ता दिखाने के, बाप का खजाना देने के निमित्त सहारा बनो तो कमजोरियों का किनारा स्वतः हो जायेगा।

13) जैसे स्नेह में सभी पास मार्क्स लेने वाले हो, ऐसे अब समाधान स्वरूप की माला तैयार करो। सम्पूर्ण बनना अर्थात् समाधान स्वरूप बनना। जैसे ब्रह्मा बाप को देखा समस्या ले आने वाला भी समस्या भूल जाता था। सम्पूर्ण स्थिति के आगे समस्यायें बचपन का खेल अनुभव होती हैं। तो फालो फादर कर अपनी सम्पूर्ण स्थिति में स्थित रहो।

14) मास्टर सर्वशक्तिवान के आगे कोई भी समस्या आ नहीं सकती। जैसे हाथी के पांव के नीचे अगर चींटी आ जाए तो दिखाई देगी क्या? तो यह समस्यायें भी आप महारथियों के आगे चींटी समान हैं, इन्हें खेल और खिलौना समझो तो खुशी में रहेंगे, कितनी भी बड़ी बात छोटी हो जायेगी।

15) कोई भी खिटखिट का कारण होता है - तू मैं, मेरा तेरा..। लेकिन बाप को सामने रखकर दिल से “मेरा बाबा” कहो तो कोई भी खिटखिट वा समस्या सहज समाप्त हो जायेगी। सदा निर्विघ्न बन तीव्र पुरुषार्थ से उड़ती-कला का अनुभव करते रहो तो बहुतकाल की निर्विघ्न स्थिति, मजबूत स्थिति सब मजबूरियों को सहज समाप्त कर देगी।

16) एक साक्षीपन, दूसरा त्रिकालदर्शी यह दोनों स्टेज महारथियों की होने के कारण कोई कितनी भी विकराल रूप की परिस्थिति हो या बड़े रूप की समस्या हो लेकिन अपनी स्टेज ऊंची होने के कारण वह बिल्कुल छोटी लगेगी। बड़ी बात अनुभव नहीं होगी और न विकराल अनुभव होगी।

17) जब स्वयं को अकालमूर्त आत्मा समझेंगे तब अकाले मृत्यु से, अकाल से, सर्व समस्याओं से बच सकेंगे। मानसिक चिन्तायें, मानसिक परिस्थितियों को हटाने का एक ही साधन है - अपने इस पुराने शरीर के भान को मिटाना। देह-अभिमान को मिटाने से सर्व परिस्थितियाँ स्वतः मिट जायेंगी।

18) अपने संकल्पों के तूफान वा कोई भी सम्बन्ध द्वारा, प्रकृति वा समस्याओं द्वारा तूफान व विघ्न आते हैं तो उनसे मुक्ति पाने के लिए योग युक्त, युक्ति-युक्त बनो। जब तक योगयुक्त नहीं तब तक विघ्नों से युक्त हो। योगयुक्त आत्मायें तूफान को भी तोहफा बना देती है।

19) प्रतिज्ञा करो कि कैसी भी समस्या आये, कोई भी कारण

बने लेकिन हम और कोई पर भी बलि नहीं चढ़ेंगे। जैसे बीज बोने के बाद उसको जल दिया जाता है तब वृक्ष रूप में फलीभूत होता है। इस रीति यह भी जो प्रतिज्ञा की है उसको पूर्ण करने के लिए संग का जल भी चाहिए तो अपनी हिम्मत भी चाहिए।

20) जब बाप का स्नेह स्मृति में रहेगा तो सर्वशक्तिमान के स्नेह के आगे समस्या क्या है! कहाँ वह स्नेह और कहाँ समस्या! वह राई वह पहाड़, इतना फर्क है। तो अनादि रत्न बनने के लिए सर्वशक्तिमान की शक्ति और स्नेह को सदैव साथ रखना है। अपने को अकेला कभी भी नहीं समझो। साथी के बिना जीवन का एक सेकेण्ड भी न हो।

21) सर्व खजानों की बचत करने के लिए सहनशील बनो। सहनशील श्रेष्ठ आत्मा सदा ज्ञान-योग के सार में स्थित हो विस्तार को, समस्या को, विघ्नों को सार में ले आती है। जैसे लम्बा रास्ता पार करने में समय, शक्तियाँ समाप्त हो जाती हैं अर्थात् ज्यादा यूज़ होती हैं। ऐसे विस्तार है लम्बा रास्ता पार करना और सार है शार्टकट रास्ता पार करना। पार दोनों ही करते हैं लेकिन शार्टकट करने वाले समय और शक्तियों की बचत होने कारण निराश व दिलशिकस्त नहीं होते, सदा मौज में मुस्कराते पार करते हैं।

22) निर्माणचित आत्मायें कारण वा समस्या को पॉजिटिव समाधान बनायेंगी। वह किसी भी प्रकार के विघ्न व समस्या अथवा माया के वार को वार न समझ, खेल के समान अनुभव करते खुशी-खुशी पार कर लेंगे, उनकी अवस्था सदा एकरस रहेगी। कभी घबरायेंगे नहीं, हलचल में भी नहीं आयेंगे।

23) समय प्रमाण लव और लॉ का बैलेन्स रखो लेकिन लॉ में भी लव महसूस हो, इसके लिए आत्मिक प्यार की मूर्ति बनो तब हर समस्या को हल करने में सहयोगी बन सकेंगे। शिक्षा के साथ सहयोग देना ही आत्मिक प्यार की मूर्ति बनना है।

24) जैसे गायन है कि पाण्डव अन्त समय में ऊंची पहाड़ी पर गल गए अर्थात् स्वयं देह-अभिमान व दुःख की दुनिया के प्रभाव से परे ऊंची स्थिति में स्थित हो गये। ऐसे आप बच्चे अपनी ऊंची स्थिति में स्थित हो नीचे रहने वालों का साक्षी हो खेल देखो तो सभी समस्यायें समाधान स्वरूप में परिवर्तित हो जायेंगी। क्या होगा, कैसे होगा, हमारा क्या होगा... ऐसे किसी भी प्रकार के प्रश्नों की हलचल नहीं होगी। ऐसी स्थिति में रहने वाले विजयी रत्न बन जाते हैं।

25) दिन-प्रतिदिन समस्याएं तो बढ़नी ही हैं, लेकिन उसमें अपनी स्थिति इतनी पावरफुल हो जो परिस्थितियाँ स्थिति से बदल

जायें। परिस्थिति के आधार पर स्थिति न हो। स्थिति परिस्थिति को बदल सकती है क्योंकि सर्वशक्तिमान की संतान हो। रचयिता के बच्चे रचना के अधीन कैसे होंगे। अधिकार रखना है न कि अधीन होना है। जितना अधिकार रखेंगे उतना परिस्थितियां भी बदल जायेंगी।

26) साइलेन्स की शक्ति द्वारा परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाओ। निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन कर दो। माया कितने भी प्रकार की समस्या के रूप में आये लेकिन आप परिवर्तन की शक्ति से, साइलेन्स की शक्ति से समस्या को समाधान स्वरूप बना दो। कारण को निवारण रूप में बदल दो। यह परिवर्तन शक्ति आप बच्चों को बाप द्वारा वर्से में मिली है। परिवर्तन की शक्ति वालों को बापदादा अमर भव का वरदान दे रहे हैं।

27) जो बच्चे सदा उमंग-उत्साह में रहते हैं, उनके सामने कोई भी समस्या ठहर नहीं सकती। उमंग-उत्साह वाले कभी दिलशिकस्त नहीं हो सकते, सदा दिल खुश। उमंग-उत्साह तूफान को तोहफा, पहाड़ को रुई बना देता है। उत्साह किसी भी परीक्षा वा समस्या को मनोरंजन अनुभव कराता है इसलिये कभी भी उत्साह कम नहीं होना चाहिये।

28) अब अपना समय बेहद की सेवा में लगाओ तो समस्यायें सहज ही भाग जायेगी। समस्याओं के वशीभूत कमजोर आत्मा को शक्ति और गुणों का सहयोग दो, असमर्थ को समर्थी दो तो उनकी दुआयें आपके लिए लिफ्ट बन जायेंगी। सदा प्रसन्न रहना और प्रसन्न करना – यह है दुआयें लेना और दुआयें देना। यह दुआयें सहज ही मायाजीत बना देंगी।

29) जो बच्चे परमात्म प्यार में सदा लवलीन, खोये हुए रहते हैं उनकी झलक और फ़लक, अनुभूति की किरणें इतनी शक्तिशाली होती हैं जो कोई भी समस्या समीप आना तो दूर लेकिन आंख उठाकर भी नहीं देख सकती। उन्हें कभी भी किसी भी प्रकार की मेहनत हो नहीं सकती।

30) जितना-जितना याद में रहेंगे उतना अनुभव करेंगे कि मैं अकेला नहीं लेकिन बाप-दादा सदा साथ है। कोई भी समस्या सामने आये तो यही स्मृति में रहे कि मैं कम्बाइन्ड हूँ, तो घबरायेगे नहीं। कम्बाइन्ड रूप की स्मृति से कोई भी मुश्किल कार्य सहज हो जायेगा। अपने सब बोझ बाप के ऊपर रख स्वयं हल्के हो जाओ तो सदा अपने को खुशानसीब अनुभव करेंगे और फरिश्ते के समान नाचते रहेंगे।

(त्रिमूर्ति दादियों के अमृत वचन)

शिवबाबा याद है ?

ओम् शान्ति

मधुबन

गुल्जार दादी जी के अमृत वचन

“सबको खुशी की खुराक खिलाकर हेल्दी, वेल्दी और हैपी बनाओ”

(16-01-08)

दुनिया में अभी पापाचार, भ्रष्टाचार दुःख बहुत बढ़ रहा है, अभी तो लोग भी समझते हैं कि बहुत अति में जा रहा है। पहले हम कहते थे विनाश होना है, अभी वो पूछते हैं कब होगा। मतलब वो भी देख-देखके, सुन-सुनके थक गये हैं क्योंकि अभी सब अति में जा रहा है। अति में जाने के बाद कोई अन्त करने वाला भी चाहिए ना। तो अभी डबल डॉक्टर तैयार हुए हैं तो जल्दी इस दुःख और अशान्ति को दूर करने की सेवा करेंगे क्योंकि डॉक्टर्स भी बाबा जैसा काम करते हैं। जैसे बाबा का काम है दुःख हर करके सुख देना, तो डॉक्टर भी थोड़े समय के लिए इंजेक्शन या गोली से दुःख तो खत्म कर देते हैं, ठीक तो हो जाते हैं ना लेकिन अल्पकाल के लिए, शरीर के लिए।

आत्मा निरोगी नहीं बनती है। तो अभी आप डबल डॉक्टर्स जो हैं वो तो डबल काम करेंगे ना। जिससे तन और मन दोनों ही हेल्दी हो जाये, तो बाकी चाहिए क्या! एक खुशी शब्द में हेल्थ भी है, वेल्थ भी है, हैप्पी भी है क्योंकि खुशी के लिए कहा जाता है खुशी जैसा कोई खजाना नहीं, खुशी जैसी कोई खुराक नहीं। तो अभी प्लान बना करके सभी को खुशी की खुराक भी खिलाओ और दवाई, दुआ दोनों ही करो। तो बाबा की आशीर्वाद से, बाबा की दुआओं से उन आत्माओं को भी दुआयें मिलेगी। इतने सब मिल करके और दृढ़ता से करेंगे तो जो बाबा चाहते हैं वो प्रत्यक्ष साकार होकर ही रहेगा। जहाँ हिम्मत है वहाँ बाबा की मदद पदमगुणा है ही।

गुल्जार दादी जी के अमृत वचन

“बाबा की छत्रछाया के नीचे रहो, कम्बाइण्ड स्वरूप को यूज करो
तो सदा विजयी बन जायेंगे”

(दूसरा क्लास)

आप सभी अपने प्यारे मधुबन घर में आकर बापदादा के चरित्र और मुरली सुन करके बहुत हर्षित हो रहे हैं। मधुबन का वायुमण्डल, मधुबन की मदद और इतना बड़ा परिवार देख करके भी बड़ी खुशी होती है। लोग तो कहते यह ब्रह्माकुमारियां घर-बार छोड़ा देती हैं लेकिन प्रैक्टिकल में देखा जाए, हमारे घर इतने हैं जो हमको डायरी रखनी पड़ती है, जहाँ भी जाओ वहाँ डायरी में एंट्री कहाँ है, क्या है... तो हमने घर बनाये हैं या छोड़े हैं? क्योंकि इतने घर तो किसके भी नहीं होंगे, और परिवार भी लाखों का परिवार... ऐसे तो परिवार में 4 भी होते हैं, 8 भी होते हैं, 12 भी होते हैं, पर इतना बड़ा परिवार हमने छोड़ा है या लिया है? इतना बेहद परिवार तो किसी का भी नहीं होगा। तो हमने अपना असली घर बनाया है, बाबा का घर। कोई भी सेन्टर पर हम जाते हैं तो फ़लक से कहेंगे कि यह हमारा घर है, बाबा का घर है। तो बड़े परिवार वाले इतने घरों में अपने परिवार को देख करके कितना खुश होते हैं! तो बाबा प्रश्न पूछता है, मेरे बच्चे आप खुश रहते हो? दूसरा प्रश्न यह होता - सदा खुश हो या कभी-कभी, थोड़ा-थोड़ा खुशी होती है? बाबा कहते भगवान के बच्चे वो सदा खुश नहीं रहेंगे तो कौन रहेंगे? क्या है कि कभी-कभी बाबा बाबा शब्द बोलते भी थोड़ा हल्का हो जाता है। बाबा भगवान है, उसके हम बच्चे हैं। अगर भगवान के रूप में बाबा की स्मृति सदा रहे तो खुशी न रहे, यह हो ही नहीं सकता क्योंकि खुशी इस ब्राह्मण जीवन की खुराक है। ब्राह्मण जीवन सर्व श्रेष्ठ है और इस सर्वश्रेष्ठ जीवन में खुशी अविनाशी जरूरी है क्योंकि अविनाशी बाबा की देन है।

बाबा सर्वशक्तिवान है, हम कभी कभी किसी भी शक्ति में मानो कमजोर हो जाते हैं, तो हम सोचते हैं हमारे से यह समस्या हल होना बहुत मुश्किल है। कभी-कभी अलबेले भी हो जाते हैं और कभी-कभी दिलशिकस्त भी हो जाते हैं। तो बाबा कहते हैं

आप में कोई भी शक्ति की कमी है लेकिन मैं जो कम्बाइण्ड हूँ वो तो सर्वशक्तिवान हूँ ना। समय पर सहयोग, वरदान और मदद देने के लिए बाबा कम्बाइण्ड है। तो जो कम्बाइण्ड सर्वशक्तिवान बाबा है, उसकी मदद क्यों नहीं लेते? उस समय क्यों नहीं बाबा को याद करते? और बाबा आया ही है - हिम्मत की मदद देने के लिए, एक कदम आपके हिम्मत का और हजार कदम बाबा की मदद के हैं क्योंकि बाबा सर्वशक्तिवान है लेकिन होता क्या है? माया भी बहुत होशियार है, उसी समय माया हमको अकेला कर देती है, बाबा को भुला लेती है और अकेले होने के कारण विजय होने के बजाए कहाँ-कहाँ हार हो जाती है।

तो ध्यान पर रहे कि माया पहले अकेला करेगी लेकिन मुझे अकेला होना नहीं है। सदा बाबा के साथ कम्बाइण्ड रहना है, हम कहें बाबा मेरे साथ है, तो साथ वाला थोड़ा किनारा भी हो सकता है लेकिन कम्बाइण्ड तो सदा ही साथ है। तो बाबा का वायदा अगर आपने दिल से याद किया, मेरा बाबा, मीठा बाबा, प्यारा बाबा तो हज़ूर हाज़िर है। लेकिन एक बाबा के संकल्प के बिना और कोई संकल्प नहीं आवे तब बाबा मेरा है। हम कहते हैं भगवान मेरा है, जहाँ भगवान है वहाँ विजय तो है ही। एक बाबा ही भगवान है और वो हमें मिल गया, इसी निश्चय के खुशी और मस्ती में रहना चाहिए क्योंकि भगवान ने जो कहा वो तो होना ही है।

बाबा का कहना और उसी समय मेरा करना, इस एक दृढ़ संकल्प ने मम्मा को मम्मा बना दिया। हमें भी ज्यादा मेहनत करने की जरूरत नहीं है, अभी तो ज्ञान इतना स्पष्ट हो गया है और बाबा एक ही शब्द कहता है जो ब्रह्मा बाबा ने किया उसको फॉलो करो। दिनचर्या का भी बता दिया कि सुबह को कितने बजे बैठो, कैसे बैठो... तो उसी विधि से बैठना है। फिर

मुरली भी ऐसे सुनना है जो अर्जुन समान गीता ज्ञान सुनते-सुनते जैसेकि मन्त्र-मुग्ध स्थिति हो जाये। बाबा मेरे लिये आया है और मुरली द्वारा मेरे से बात कर रहा है, मेरे को पढ़ा रहा है, जैसे मेरा बाबा है, वैसे मेरा टीचर है, मेरे लिए आया है यह नशा होना चाहिए। फिर सिर्फ कर्मकर्ता नहीं, कर्मयोगी बन करके कर्म करो। कर्म और योग दोनों साथ-साथ हों। कर्म में परमात्मा पिता की याद होने के कारण जो भी कर्म करेंगे उसमें सफलता हुई पड़ी है क्योंकि जैसी स्मृति वैसी स्थिति होती है, जैसी स्थिति वैसे कर्म होते हैं। और याद की खुशी में काम करने से थकावट भी नहीं होगी, निर्णय भी बहुत अच्छा होगा इसलिए बाबा कहता है सिर्फ कर्म नहीं करो लेकिन कर्मयोगी बनो। इसके लिए बीच-बीच में कर्म करते चेक करके चेन्ज करते जाओ। और बाबा ने भी बीच-बीच में ड्रिल करने की युक्ति बताई है, उस विधि से भी अपनी कमियों को चेक करो और चेन्ज करो।

हमेशा अपने को बाबा की छत्रछाया के अन्दर हूँ, यह अनुभव करो। जहाँ बाबा की छत्रछाया होगी वहाँ माया की छाया आ ही नहीं सकती है। बाबा की याद ही छत्रछाया बन जाती है, ऐसी छत्रछाया के नीचे जब हैं तो माया आ ही नहीं सकेगी इसलिए मन में याद द्वारा खुशी की डांस करते रहो, तो खुशी देने वाला बाबा जरूर ज्यादा याद आयेगा। आज की

दुनिया की भेंट में हमारे जैसा खुश और कोई भी नहीं रह सकता है। अगर हमारी खुशी कभी चली जाती है तो उसका कारण है कोई ने कुछ बुरा कह दिया, इनसल्ट कर दिया या कुछ झूठ बोल दिया तो बहुत गुस्सा आता है। कोई भी मन में फीलिंग की फ्लू आती है तो मन नाखुश होता है। कोई के कुछ कहने से ही हमारी खुशी चली जाती है और हमको और ही परेशानी देकर जाती हैं क्योंकि हम उसी कही हुई बात को भिन्न-भिन्न रूप से अपने हिसाब से सोचते रहते हैं। तो बीते हुए को ही नहीं सोचते रहो क्योंकि इससे हमारी खुशी गुम हो जाती है। तो कभी भी अविनाशी बाबा से मिली हुई आत्मिक खुशी को, अतीन्द्रिय सुख को जाने नहीं देना, खोने नहीं देना।

बाबा कहते खुश रहो, खुशी बांटो, जितनी बांटेंगे उतनी बढ़ेगी। खुशी ऐसी चीज़ है जो आगे बढ़ती जाती है। जैसे बाबा हमको खुशी का खज़ाना देते हैं हम लेते हैं और खुश रहते हैं। तो आप सब इस रिकॉर्ड का चार्ट बाबा को देंगे? इसके लिए अभी से चेक करना - सदा खुश हैं या खुश हैं? कभी कभी वाले तो फिर वहाँ सतयुगी राज्य में भी कभी कभी मिलने आयेगे। तो जो जितना यहाँ नजदीक साथ सहयोगी रहता है, वो वहाँ भी विश्व-राज्य अधिकारी के नज़दीक होंगे। तो अब बाबा के नजदीक सो वहाँ भी नज़दीक रहेंगे इसलिए अपना चार्ट अपने आप चेक करके खुश रहना और खुशी बाँटना।

दादी जानकी जी के अमृत वचन

“स्वयं को तीन बीमारियों से बचाओ - 1. थकने की, 2. चिन्ता करने की और 3. रूठने की”

(28-06-06)

बच्चे को पहले माँ बाप का प्यार मिलता है, फिर जब बड़ा होता है तो दुआयें मिलती हैं। बाप के प्यार ने बच्चे को दुआयें लेने के पात्र बनाया। फिर ज्ञान सागर के रूप में पढ़ाया - “हू एम आई”। जब तक किसी को आत्मा की फीलिंग नहीं आई, तब तक जैसे उसका जन्म ही नहीं हुआ। परमात्मा कह रहा है तुम आत्मा हो, तो शरीर से डिटैच हो जाते हैं क्योंकि वह पुर्नजन्म से न्यारा है तो उसके कहने में ताकत है। जो देह के सम्बन्ध से

न्यारा है वह मेरे से बात करता है, दृष्टि देता है, घर की याद दिलाता है। मैं भगवान के सामने हूँ, यह सोचते ही खुशी आ जाती है। यह दुनिया पुरानी, पराई, छी-छी है। मैं आत्मा बाबा की हूँ तो अनेक जन्मों के विकारी संस्कार खत्म हो गये। अभी तक पुराने विकारी संस्कार छोटे-मोटे तूफान ले आते हैं, रूठने का भी संस्कार है। शकल चेन्ज हो जाती है। भाग्यवान कभी रूठता नहीं है। वह बाप को देखता है तो नशा चढ़ता है। उल्टे

नशे वाला रूठता है। मैंने ये सेवा की, मैंने यह किया, कोई पूछता नहीं है। फिर खाना भी अच्छा नहीं लगता, नींद भी अच्छी नहीं आती है। सुल्टा नशा, नारायण बनने का नशा, लक्ष्मीपति, प्रकृति का पति यह नशा रहता तो वह लक्षण आयेंगे। ईश्वर की सन्तान हूँ, वर्षों में भगवान के गुण आते जायेंगे। भगवान भी खुश होकर बच्चे को वर्षों में सब गुण दे देता है।

भगवान ने इतना सबकुछ दिया है तो कितनी खुशी मेरे पास है! खुशी की खुराक खाओ तो चिन्ता करने का मर्ज छूट जाये। चिन्ता वाले को नींद भी ठीक से नहीं आती है। जिनके संग में रहते हैं, उसके संग का भी फायदा नहीं ले पाते हैं। कहेंगे मेरा कोई भी नहीं है। अरे खुशी में रहना है, अकेले हूँ तो भी खुश हूँ, सबके साथ हूँ तो भी खुश हूँ। वो खुश रहने वाला मजबूत बन जाता है। हमें बाबा का सच्चा, पक्का बच्चा बनना है। कोई भी परीक्षा आये, हम पक्के रहें।

याद को सहज बना दो, थक मत जाओ। थकने से याद नहीं ठहरती है। एक है थकने की बीमारी, दूसरी है चिन्ता की बीमारी, तीसरी है रूठने की बीमारी। सब बीमारियों की दवा एक है - बाबा की याद। याद में रहने से बीमारी भाग जाती है। यात्रा पर भावना से जाते हैं तो थकते नहीं हैं, उनको पक्का है अन्त तक पहुंचना है, वापस नहीं जाना है। भले पतले हो जायेंगे, बीमार हो जायेंगे, पर वापस नहीं जाना है। यहाँ भी जो वापस पुरानी दुनिया को देखते या पीछे मुड़कर देखते हैं तो थकते हैं, फिर सांस चढ़ता है, फिर हिम्मत हार खिला देती है। विजयी माला में आने वाला अच्छी सेवा करता, अच्छा पुरुषार्थ करता। वह कभी किसी की कम्पलेन नहीं करता है, उसकी भी कोई कम्पलेन नहीं करता है। अशरीरी बनने का अभ्यास, बाबा के प्यार की शक्ति और घर की याद तीनों इकट्ठी चाहिए। सेकेण्ड में डिटैच हो जाओ।

बाबा खुद कहता है मंजिल ऊंची है, टाइम लगता है। फिर बाबा कहता है बच्ची सेकेण्ड लगता है। माया टच करती है सेकेण्ड में, टच किया बस मुरझा गये। माया को सेकेण्ड लगे और मुझे बाबा का बनकर मुस्कराने में सेकेण्ड न लगे! माया के पास पूरा प्लान है हमको हार खिलाने का। बाबा हमको प्रैक्टिस कराता है जीत पहनाने की। हम पहले से रेडी हैं, अस्त्र-शस्त्र तैयार हैं। अन्दर ही अन्दर अपनी घोट तो नशा चढ़े। माया

खुशी छीन लेती है। कौन हूँ, किसकी हूँ, स्मृति आई कल्प पहले वाली हूँ, बाबा आपसे पूरा वर्सा लेंगे। कल्प पहले भी लिया था, अभी भी लेना है और कोई काम ही नहीं है। हियर नो इविल, सी नो इविल... अगर कोई इविल बात सुनी, देखी तो वर्सा गँवाया। जो काम की बात है वही सुनो। बाबा की बातें ही सुनो और सुनाओ।

मेरे को लोग कहते हैं तू जबरदस्ती किसी को ज्ञान सुनाती हो। मातायें जबरदस्ती बच्चों को पनीर खिलाती हैं, ताकि बड़ा होकर बीमार न पड़े। पहले कडुआ लगता है, थू-थू करता है, बाद में काम आता है। तो मेरा काम क्या है! अगर मैं अपना मित्र आपेही नहीं बनूंगी तो बाबा भी नहीं बनेगा। लायक आत्माओं का ही कम्पेनियन बाबा बनता है। रूठने वाले का थोड़ेही बनेगा। बाहर की बात अन्दर गई, देखी, सोची तो चेहरा मुरझा जायेगा। फिर पहले वाली बात याद आयेगी, अरे थक मत जाना, सुबह की मंजिल दूर नहीं। बाबा के सामने संगमयुग पर हैं, घर में बैठे बाप को याद कर रहे हैं। यह बात याद रहेगी तो थकेंगे नहीं।

जिसने धनी के हवाले सब कर दिया तो धनी सम्भालता भी है। आपने जितना सच्ची दिल से भगवान के घर की सेवा की होगी, उतना भगवान आपकी केयर करेगा, सदा सुखी रहेंगे। जो सदा अपनी या दूसरों की कम्पलेन करते रहते हैं, भगवान भी इसमें क्या करेगा। बच्चे कहते हैं तुम्हीं से खाऊं, तुम्हीं से बोलूँ, तुम्हीं संग रहूँ, तो कहेगा अच्छा बच्चा तो अन्त मते भी ऐसे ही होगा। याद किसको कहा जाता है? न सिर्फ मनन-चिन्तन करना है लेकिन अनुभव की शक्ति ऐसी हो जो दूसरों का भी विश्वास बिठा दे। जो भी संग में आये वो भी कहे इसको विश्वास बहुत है, मैं भी करती हूँ। जो अपने लिए भविष्य का फिकर या दूसरों के भविष्य का फिकर करते हैं, उनका फिकर भगवान भी क्यों करे! संगमयुग पर बाप से बेफिक्र बादशाही का वर्सा ले लो। मस्त फकीर बनो, फकीर के पास तुम्बी भी नहीं तो लाठी भी नहीं।

बाबा ने कहा तोड़ो, छोड़ो और भूल जाओ। जो देही-अभिमानि स्थिति में रहने के आदती होते हैं, वो एक सेकेण्ड भी कोई बात पकड़ते नहीं हैं। देखना, सुनना, बोलना उससे प्रैक्टिकल का नशा चढ़ता है। तो ऐसे नशे में रहो, फिर नशे वालों की महफिल यहाँ लगे। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन “अन्तिम समय प्रमाण पुरुषार्थ की गति”

1) अन्तिम समय प्रमाण अभी हम क्या पुरुषार्थ करें? हम कहती जैसे हमारा बाबा निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी स्थिति में रह सम्पन्न और सम्पूर्ण बनें। ऐसे अभी हम सबको भी यही मन्त्र सदा याद रहे, इसका ही हमें पुरुषार्थ करना है।

2) जीवन में त्याग, तपस्या, सेवा तीनों बातों का बैलेन्स हो। हम सबका यही लक्ष्य है कि अब हमें बाबा समान कर्मातीत, साक्षात्कार मूर्त बनना है, इससे हमारी बुद्धि दिव्य हो जाती है। कई कहते हैं हम क्या करें हमारी तो पुरुषार्थी लाइफ है, वातावरण ऐसा है.. गलतियाँ हो जाती हैं, पुरुषार्थी हूँ, पुरुषार्थी हूँ, पुरुषार्थी हूँ.. कहकर उसकी भी पालना करते हैं। अब तक भी हम यही शब्द कहते रहेगे तो यह भी जैसे उनकी पालना करते हैं। क्यों नहीं कहते कि हमारे एकजाम के दिन हैं, पढ़ाई पूरी हुई। कोई नया लेसन मिल रहा है क्या? बाबा की मुरली नित्य नई है, वह अलग बात है परन्तु महावाक्य तो पुराने ही हैं ना। पढ़ाई तो हमारी पुरातन से पुरातन चली आ रही है, आदि में मनमनाभव, अन्त में भी मनमनाभव। नया जन्म मिला, वर्सा बाबा ने दे दिया, अधिकारी बना दिया, बाकी क्या चाहिए। सिर्फ अशरीरी बनने की मेहनत करनी है। यह योग की गहरी अनुभूति जितनी हम करें उतनी थोड़ी है, कम है। ज्ञान सागर बाबा ने जो हमें गुणों का खजाना दिया है, बुद्धि में वह भरतू रखें, वह कमाई हमारे जमा के खाते में जमा होती है।

3) कईयों के पास सूक्ष्म में माया आती है, संकल्प विकल्प बहुत आते हैं। माया के आने का कारण है बाबा से प्रीत में कमी। जब हमारा नया जन्म, नया बाप, नई माँ, नई पढ़ाई, नया आक्यूपेशन सब नया, नया है – फिर हम यह क्यों कहते हैं कि पुराना संस्कार है! क्यों पुराने को मारा नहीं है क्या? पुराना माना साँप, साँप को जिन्दा रखेंगे तो फूँक तो मारेगा ही। हमें पुराना क्यों सोचना चाहिए, क्या करें – यह मेरा पुराना स्वभाव है ना! हमने कभी ब्रह्मा बाबा के मुख से यह शब्द नहीं सुने जो बाबा कहे मेरा पुराना संस्कार है। हमने कभी नहीं देखा कि बाबा में कोई पुराना संस्कार है। रात-दिन बाबा के संग रहे, पुराना स्वभाव-संस्कार-संकल्प क्या होता, यह कभी हमने नहीं देखा, इसीलिए आज पहले हम सब इस बात का संकल्प करें कि पुराना संस्कार मर गया। हमारा संस्कार नये ब्राह्मण जन्म का है।

4) सवेरे उठते हैं तो उठते ही बाबा सामने आता है या पुराना संस्कार सामने आता है? पिछले जन्म को मार कर उसका श्वास भी निकाल दो। पुराना संस्कार कहते हो माना अभी तक श्वास रखकर पालना करते हो, साँप को दूध देते हो कि हे साँप तू दूध पी और फूँक मार। क्यों कहें पुराना संस्कार है, जन्म नया, परिवार नया, पढ़ाई नई, हमें जाना नई दुनिया में है, सेवा हमारी नई, फिर हम पुराना-पुराना क्यों पालकर बैठे हैं, इसलिए इस भट्टी में पुराने संस्कार को मारकर जाओ, तब ब्राह्मण जन्म का सुख ले सकेंगे।

5) कई चलते-चलते थक जाते हैं लेकिन हमारा बाबा कभी थकता है? तो हम भी बाबा जैसे अथक क्यों नहीं बनते हैं! इसके लिए टाइम पर सोओ, टाइम पर उठो तो थकावट की बात ही नहीं। लेकिन थकावट तब होती है जब दिलशिकस्त होते हो, अलबेले होते हो। तो न हमें अलबेला होना है, न सुस्त होना है। सदा चुस्त रहने के लिए उमंग और हुल्लास के दो पंख साथ रखो। तीसरा - अपनी मौज मस्ती में रहो। कभी कोई उल्टा कुछ कहता भी है तो एक कान से सुनो, दूसरे से निकाल दो। लेकिन दादी कहती एक कान से सुनकर दूसरे से नहीं निकालो, नहीं तो वह अन्दर घूमकर फिर बाहर निकलेगा इसलिए अच्छा यही है, कि यहाँ से ही सुनो, यहाँ से ही निकाल दो। जैसे इस कान में पानी पड़ा है तो यहाँ से ही निकालेंगे ना, ऐसे ही यहाँ से ही सुनो, यहाँ से ही निकाल दो। यहाँ की बात फालतू यहाँ तक भी क्यों घुमायें। उसे निकालने के लिए क्यों टाइम वेस्ट करें, यह भी रांग है।

6) हमारे लिए ऐसी कोई घड़ी न आवे जो हैरानी महसूस हो। मैं आज हैरान हूँ, परेशान हूँ, अब इस भाषा को समाप्त कर दो। न ऐसी कोई बात सुनो, न हैरान हो। किसी की फालतू बातें न सुनो, न उसका चिंतन करो। हाँ, किसी का मन भरा हुआ है तो जिसकी ड्यूटी है उसके पास जाकर सुनाके मन को हल्का करो। परन्तु ऐसे नहीं कि आपने दिल हल्की की और मैंने वह बात सुनकर दिल भारी कर ली। नॉट एलाऊ इसलिए हमें न भारी होना है, न किसी को भारी करना है। न कभी मन को भारी रखना है। बात आई सेकेण्ड में समाप्त हुई। इसी को कहा है ड्रामा की बिन्दी लगाना सीखो - इसकी विधि है ड्रामा, बिन्दू। बातें आयेंगी परन्तु आयी, गयी। अभी इन सभी बातों से हमें मुक्त होना है। अच्छा। ओम् शान्ति।